पढ़ोगे
लिखोगे
तो होगे ख़राब
असग़र वजाहत

पढ़ोगे लिखोगे तो होगे खराब

डॉ. पांडेय का व्याख्यान जारी है, ''डॉक्टर साहेब! गर्मियों में विशेषज्ञ मिलने मुश्किल हो जाते हैं...अरे शिमला या नैनीताल हो तो कहिए मैं सैकड़ों विशेषज्ञ जमा कर जमाकर दूं लेकिन गर्मियों में दिल्ली...अरे भाई जी, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति वगैरा की बात तो छोड़ दो, छुटभइए नेता गर्मियों में राजधानी छोड़ देते हैं...अब जब पानी नहीं बरसेगा, यही समस्या रहेगी...अब देखो जी, हमें तो यही आदेश है कि विशेषज्ञों की मानो...तो हम पालन करते हैं...विश्व बैंक से हम लोगों ने दस करोड़ मांगा था नए स्कूल खोलने के लिए। उन्होंने कहा दस करोड़ से पहले 'ये' और 'ये' और 'ये' कराएंगे। इसके लिए पांच करोड़ देंगे...फिर पाठ्यक्रम बदलने को इतना, फिर इतना...होते-होते सौ करोड़ हो गया है...चलो ठीक है, शिक्षा पर पैसा लग रहा है...पर समझ में कम ही आता है। अब देखोगे, इन्हीं विशेषज्ञों ने बच्चों के बस्तों का वजन बढ़ाया फिर ये ही बोले, बच्चों की तो कमर टूटी जा रही है...अब सुनो जी विशेषज्ञ कहने हैं हमारी शिक्षा चौहद्दी में कैद हो गई है। देखो जी, पहले स्कूल की चार दीवारें...फिर कहते हैं क्लास रूम की चार दीवारें...पाठ्यक्रम की चार दीवारें, अध्यापक की चार दीवारें...परीक्षा की चार दीवारी...अब बोलो...आदेश हो जाए तो तोड़ दी जावें सब दीवारें-''

''साढ़े दस बज रहा है।'' डॉ. सक्सेना बोले।

''अरे डाक साहेब क्यों जल्दिया रहे हो...अभी न आए होंगे।'' पैंतालीस अध्यापक, जिनमें आधी के करीब महिलाएं और लड़कियां। कुछ अध्यापक गंवार जैसे लग रहे थे और कुछ अध्यापिकाएं अच्छा-ख़ासा फैशन किए हुए थीं। इन सबके चेहरों पर एक असहज भाव था। ऐसा लगता था कि वे इस सबसे सहमत नहीं हैं जो हो रहा है या होने जा रहा है। डॉ. सक्सेना ने सोचा, ऐसा तो अक्सर ही होता है। जब बातचीत शुरू होगी तो विश्वास का रिश्ता बनता चला जाएगा और असहजता दूर हो जाएगी। डॉ. सक्सेना ने बहुत प्रभावशाली ढंग से अपनी बात शुरू की और मुद्दे के विभिन्न पक्षों को रेखांकित किया ताकि उन पर विस्तार से चर्चा हो सके। इन सब प्रयासों के बाद भी डॉ. सक्सेना को लगा कि सामने बैठे अध्यापकों-अध्यापिकाओं के चेहरे पर मजाक उड़ाने, उपहास करने, बोलने वाले को जोकर समझने के भाव आ गए हैं। कुछ जेरे-लब मुस्कुराने भी लगे। तीस साल पढ़ाने से दुष्ट-से-दुष्ट छात्र को सीधा कर देने का दावा करने वाले डॉ. सक्सेना अपना चेहरा, जितना कठोर बना सकते थे, बना लिया। आवाज जितनी भारी कर सकते कर ली और बॉडी लैंग्वेज को जितना आक्रामक बना सकते थे बना लिया। लेकिन हैरत की बात यह कि सामने बैठे लोगों के चेहरों पर उपहास उड़ाने वाला भाव दिखाई देता रहा। एक अध्यापिका के चेहरे पर ऐसे भाव आए जैसे वह कुछ कहना चाहती है।

''सर आप जो कुछ बता रहे हैं बहुत अच्छा है। पर हमारे काम का नहीं है'' अध्यापिका बोली।

इस प्रतिक्रिया पर डॉ. सक्सेना को गुस्सा तो बहुत आया लेकिन पी गए और बोले, ''क्या समझ नहीं आ रहा?''